सावित्री बाई फुले

(3 जनवरी 1831 - 10 मार्च 1897)

सामाजिक न्याय और नारी शिक्षा के लिए जुझारू महिला

देश अब भी ब्रिटिश शासन के अधीन था। जन शिक्षा में लोगों ने दिलचस्पी लेनी शुरू ही की थी। नारी शिक्षा की बात पर भवें अब भी तन जाती थीं। ऐसी ही स्थिति में सावित्री बाई फुले ने काफ़ी कम उम्र में अनौपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त की। वे प्रख्यात समाज महात्मा ज्योतिराव फुले की पत्नी थीं। उन्होंने ही नारी शिक्षा के इस महान कार्य की नींव डाली थी। उन्हें इसके लिए समाज के शक्तिशाली लोगों के तिरस्कार व आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा। उन्होंने सारी कड़वाहट को स्वीकार कर लिया, लेकिन अपने रास्ते पर से डिगना स्वीकार नहीं किया।

ज्ञान की एक ज्योति मुझमें जल उठी रोशनी में जिसकी जगमगा उठा जहां

उन्होंने सावित्री बाई को सिर्फ़ पढ़ना-लिखना ही नहीं सिखाया बल्कि उन्हें भी नारी शिक्षा के प्रति समर्पण की भावना से भर दिया। सावित्री बाई स्वयं भी एक बुद्धिमती व संवेदनशील महिला थीं, उन्हें नारी शिक्षा के महत्व व ज़रूरत को समझते देर न लगी। नारी शिक्षा उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। वे पहली भारतीय महिला थीं जिसने श्रीमती मिशेल के "नार्मल स्कूल" में अध्यापन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सावित्री बाई फुले व महात्मा फुले ने मिल जुलकर महाराष्ट्र में पहले बालिका विद्यालय की स्थापना की। उस समय लड़कियों को शिक्षित करने की बात कोई सोचता भी नहीं था। लिहाज़ा समाज में नारी शिक्षा का प्रचार-प्रसार काफ़ी मुश्किल था। वे व्यक्तिगत तौर पर यह मानते थे कि लड़कियों को शिक्षित करने से सिर्फ़ उनका ही भला नहीं होगा बल्कि आने वाली पीढ़ी को भी इससे फ़ायदा होगा। इस प्रकार पूरे समाज का स्तर बढ़ जाएगा। वे समझते थे कि यह काफ़ी मुश्किल काम है फिर भी करना ज़रूरी है। यही प्रेरणा समाज सुधार के उनके तमाम प्रयासों का

मूलाधार थी। दोनों ने मिलकर लोगों को समझाने-बुझाने के लिए तरह-तरह के तरीके अपनाए। उन्होंने शिक्षा के प्रति लोगों में दिलचस्पी जगाने के लिए तरह-तरह की योजनाएं शुरू कीं। मार्के की बात यह है कि 150 साल पहले जिन योजनाओं की उन्होंने कल्पना की और लागू किया वे आज भी प्रासंगिक हैं।

उनके द्वारा स्थापित बालिका विद्यालय धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगा। उनकी मेहनत रंग लाने लगी। सावित्री बाई की छात्राएं खास तौर पर समर्पित व बुद्धिमती मानी जाती थीं। तत्कालीन शिक्षा निरीक्षक कैप्टन जे.एफ. लेक्टर ने भी 26 दिसंबर, 1856 की रिपोर्ट में इस बात को स्वीकार किया था। ज्योतिबा और सावित्री बाई दोनों का ही यह मानना था कि शिक्षा का अर्थ है ज्ञान व जानकारी। इसलिए समाज के हर तबके में शिक्षा का प्रचार-प्रसार जरूरी है। सन् 1852 में उन्होंने अछूतों के लिए स्कूल की स्थापना की। इससे इन उत्पीड़ित जातियों की लड़कियों के लिए भी स्कूल में दाखिला लेना संभव हो गया।

सावित्री बाई का कार्य क्षेत्र सिर्फ़ शिक्षा तक ही सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने औरतों को पुरुष प्रधान समाज की सांस्कृतिक जकड़न से भी मुक्ति दिलाने के प्रयास किए। बाद के दिनों में यह उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य बन गया। उन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने उन ब्राह्मण विधवाओं के लिए एक आश्रम की स्थापना की जिन्हें या तो मरने के लिए बाध्य कर दिया जाता था या फिर मार डाला जाता था। महाराष्ट्र में इस प्रथा को रोकने में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने अदालती शादी के विचार का भी समर्थन किया जिससे लोग बिना ब्राह्मण की मदद के भी शादी कर सकें। उन्होंने एक विधवा के बेटे यशवंत को गोद लिया। सावित्री बाई एक साहसी व आजाद ख्यालों वाली औरत थीं। उन्होंने कभी अपने विचारों पर कोई समझौता नहीं किया। वे पहली महिला थीं जो अपने पति को अंत्येष्टि के समय "टिटवी" ले गई। पारंपरिक हिन्दू रिवाजों के मुताबिक ऐसा करने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को है। उनका पूरा जीवन चुनौतियों से भरा था। वे किसी भी चीज़ से भय नहीं खाती थीं। उनमें हर प्रकार की स्थिति को झेल लेने की अद्‌भुत क्षमता थी।

उनका पूरा जीवन समाज में औरतों की स्थिति में बेहतरी के उद्देश्य के प्रति समर्पित था। महात्मा ज्योतिराव फुले ने हमेशा उनके प्रयासों का समर्थन किया। यही वजह थी कि उनका दांपत्य जीवन इतना सुखद था। उन्होंने हमेशा एक-दूसरे के कामों में मदद की। महात्मा फुले की मृत्यु के बाद भी सावित्री बाई के कदम रुके नहीं। सावित्री बाई फुले ने अपनी प्रतिभा व कार्यों के ज़रिए महिलाओं के दिलों में नारी शिक्षा की ज्योति जलाए रखी। □